Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 4
'बिहारी सतसई'
से कुछ पद - बिहारी
(भाग-02)

(11)

को छूट्यौ इहि जाल परि,
कत कुरंग अकुलात।
ज्यौं-ज्यौं सुरझि भज्यौ चहत,
त्यौं त्यौं उरझत जात॥

कठिन शब्दार्थ- ***छूट्यौ*** = छूटा है, मुक्त हुआ है। ***इहि*** = इस। ***जाले*** = सांसारिक मोह बंधन। ***कत*** = क्यों। ***कुरंग*** = हरिण। ***अकुलात*** = छटपटाता है। ***सुरझि*** = सुलझ कर। ***भज्यौ चहत*** = भागना चाहता है। ***त्यौं-त्यौं*** = उतना ही। ***उरझत जात*** = उलझता जाता

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। कवि सांसारिक विषयों में लिप्त लोगों की दशा पर खेद व्यक्त करते हुए, उन पर व्यंग्य कर रहा है कि इन विषयों के जाल में जो एक बार फस गया, उसका इनसे छूट पाना बड़ा कठिन होता है।

व्याख्या- कविवर बिहारी जाल में फंसे हुए हिरण को संबोधित कर कहते हैं कि हे मृग तुम इस जाल में फंस कर क्यों व्याकुल हो रहे हो? जो जाल में एक बार फंस जाता है वह फिर उस जाल से लाख कोशिश करने पर भी नहीं छूट पाता है। तु इस जाल से अब नहीं छूट पाएगा। तुम सोचते हो कि इस जाल को सुलझा कर तुम भाग जाओगे, परंतु तुम जितना इसे सुलझाओगे यह उतना ही उलझता चला जाएगा।

अन्योक्ति- कवि हिरण के माध्यम से सांसारिक विषय वासनाओं में उलझे हुए मनुष्य को संबोधित कर कहता है कि हे मनुष्य तुम सांसारिक विषय वासनाओं और भोग लिप्साओं में इस तरह से उलझ चुके हो कि अब उससे छुटकारा प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। जो एक बार इन भोग लिप्साओं में फस जाता है वह फिर उस से नहीं छूट पाता है। इसलिए तुम जितनी निकलने की कोशिश करते हो उतना ही और उलझते जाते हो। तुम तो व्यर्थ में ही व्याकुल हो रहे हो।

विशेष-

(i) कवि ने सांसारिक विषयों की असारता की ओर संकेत कियाहै।

(ii) **'जाल में फंसे हरिण'** की दशा से **भोग विलास** में पड़े मनुष्यों से सटीक तुलना की गई है।

(iii) कवि ने संकेत दिया है कि मनुष्य को संयमित जीवन बिताते हुए और भगवान पर आस्था रखते हुए जीवन बिताना चाहिए।

(iv) भाषा सरल सहज प्रवाह्मयी भावानुकूल एवं प्रसंगानुकूल है

(v) दोहे में अन्योक्ति, पुनरुक्ति तथा अनुप्रास का सही प्रयोग है।

(12)

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ॥

कठिन शब्दार्थ - **बतरस** = बातें करने का आनंद। **लाल** = श्रीकृष्ण। **मुरली** = वंशी। **धरी लुकाइ** = छिपाकर रख दी। **सौंह** = सौगंध, कसम। **भौंहन** = भौंहों से। **दैन कहै** = देने की कहने पर। **नटि जाइ** = मना कर देती है।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। इस दोहे में कवि ने कृष्ण और गोपियों के बीच चल रही सरस ठिठोली का मनोहरी चित्र अंकित किया है।

व्याख्या- कविवर बिहारी कहते हैं कि की राधिका जी और उनकी सखियाँ श्रीकृष्ण से बातों का आनंद लेने का कोई अवसर नहीं छोड़ती हैं। राधा जी और गोपियां कृष्ण मुरली को छुपा लेती है ताकि कृष्ण उनसे कुछ और देर बातें कर सकें। जब कृष्ण अपनी मुरली मांगते हैं, तो वे सभी सौगंध लेती हैं कि उनके पास मुरली नहीं है और एक दूसरे को देखकर आंखों ही आंखों में हंसती हैं। जब कृष्ण मुरली मांगते हैं तो वे देने से मना कर देती है राधा जी चाहती हैं कि कृष्ण अधिक से अधिक समय उनके पास रहें और उनसे बातें करते रहें और वे बातों का आनंद लेती रहे इसके लिए वह झूठी सौगंध भी लेती हैं और कृष्ण को रुकने के लिए विवश कर देती हैं।

विशेष-

(i) कृष्ण राधाऔर गोपियों के इस सरस परिहास द्वारा, कवि ने संयोग श्रृंगार का सजीव शब्द-चित्र प्रस्तुत कर दिया है।

(ii) सरल सहज प्रवाहमयीभावानुकूलप्रसंगानुकूल ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(iv) अनुप्रास अलंकार सुंदर प्रयोग है।

(13)

नाचि अचानक ही उठे, बिनु पावस बन मोर।
जानति हौं नंदित करी, यह दिसि नंदकिसोर॥

कठिन-शब्दार्थ- ***नाचि*** = नाचना। ***बिनु*** = बिना। ***पावस*** = वर्षा ऋतु। **नंदित** = आनंदित। ***दिसि***=दिशा। ***नंदकिशोर*** = श्रीकृष्ण।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं । इस दोहे में कवि ने अप्रत्यक्ष रूप से कृष्ण के 'घनश्याम' नाम की सार्थकता का परिचय कराया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी आज तो बिना वर्षा ऋतु के ही अचानक से मोर नाचने लगे हैं। ऐसा लगता है कि जैसे नंदकिशोर अर्थात श्री कृष्ण वन विहार के लिए निकले हो। गोपीका कहती है कि हे सखी लगता है कृष्णा ने मोरों के नाचने की दिशा को आनंदित कर दिया है। भगवान कृष्ण के श्यामल वर्ण से मोरों को मेघों का भ्रम हो गया है जिसके कारण वह बिना वर्षा ऋतु के ही नाचने लगे हैं।

विशेष-

(i) **वर्षा ऋतु में मोर नाचते हैं ।** इस प्रसंग से बिहारी की बहुज्ञता का पता चलता है।

(ii) 'नंदित' तथा 'नंद किशोर' शब्दों का सार्थक प्रयोग हुआ है।

(iii) कवि ने उत्प्रेक्षा और भ्रान्तिमान अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

(iv) बृज भाषा का लालित्य द्रष्टव्य है।

(14)

लिखन बैठि जाकी छबी,
गहि-गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के,
चतुर चितेरे कूर॥

कठिन-शब्दार्थ- ***लिखन बैठि*** = लिखने बैठे, चित्र बनाने को बैठे। ***जाकी*** = जिसकी। ***छबी*** = सुन्दरता। ***गहि-गहि*** = धारण कर-कर के। ***गरब*** = गर्व। ***गरूर*** = अहंकारे, घमंड। ***भए*** = हो गए। ***केते*** = कितने ही। ***चितेरे*** = चित्रकार। ***कूर*** = मूर्ख, असफल।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं । इस दोहे में कवि किसी नायिका की क्षण-क्षण में बदल जाने वाली छवि का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- कवि कहता है की नायिका की सखी नायक के सम्मुख उसकी सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती है कि वह नायिका इतनी सुंदर है कि बड़े-बड़े प्रसिद्ध और चतुर कुशल चित्रकार उसका चित्र बनाने के लिए अभिमान से आकर बैठे परंतु कोई भी उसका चित्र नहीं बना नहीं बना पाया। उसका रूप सौंदर्य पल-पल परिवर्तित होता रहता है इसलिए बड़े-बड़े चित्रकार भी मूढ़ बन कर लौट गए।

विशेष-

(i) महाकवि माघ तथा श्रृंगार सप्तशती में किए गए नायिका के सौंदर्य वर्णन का अनुसरण कविवर बिहारी ने किया है

(ii) **'गहि-गहि'** में **पुनरुक्ति**, **'गहि-गहि गरब गरूर'** में अनुप्रास तथा पूरे दोहे के कथन में '**अतिशयोक्ति** अलंकार है।

(iii) अनुप्रास अतिशयोक्ति वक्रोक्ति इत्यादि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।

(15)

झीनै पट में झुलमुली,
झलकलि ओप अपार॥
सुरतरु की मनु सिंधु मैं,
लसति सपल्लव डार॥

कठिन शब्दार्थ- ***झीने*** = महीन। ***पट*** = वस्त्रे। ***झुलमुली*** = कान का एक आभूषण जो हिलता हुआ झिलमिलाता है। ***झलकति*** = झलकती। ***ओप*** = चमक। ***अपार*** = अत्यन्त। ***सुरतरु*** = कल्पवृक्ष नामक वृक्ष जो सारी इच्छाएँ पूरी करने वाला माना जाता है। ***मनु*** = मानो। ***सिंधु*** = समुद्र। ***लसति*** = शोभित होती। ***सपल्लव*** = पत्तों से युक्त। डार = डाली।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं । इस दोहे में कवि ने महीन वस्त्र धारण करने वाली एक नायिका द्वारा कानों में पहने गए झिलमिली नामक आभूषण का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि ने नायिका के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि नायक के सामने नायिका के सौंदर्य का वर्णन करते हुए सखी कहती है कि नायिका के कान का झुलमुली नामक आभूषण जब उसके पतले घूंघट से बाहर झलकता है तो उसकी शोभा अपार हो जाती है। ऐसा लगता है जैसे कल्पवृक्ष की डाली अपने पत्तों सहित समुद्र में लहरा रही हो

अन्य अर्थ- झीने वस्त्रों में नायिका की झिलमिलाती छवि से अपार शोभा झलक रही है। ऐसा लगता है मानो समुद्र के जल में कल्पवृक्ष रूपी कोई पत्तों से भरी शाखा सुशोभित हो रही हो।

विशेष-

(i) नायिका के सौंदर्य का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया गया है।

(ii) भाषा सरल सहज प्रवाह मयी, भावानुकूल, प्रसंगानुकूल है और अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(iii) दोहे में '**झुलमुली झलकति**' में अनुप्रास है तथा उपमेय ' **झुलमुली'** में कल्पवृक्ष की सपल्लव डार उपमान की सम्भावना प्रकट करने के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है

(16)

कहत, नटत, रीझत, खिझत,
मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करते हैं,
नैननु, ही सौं बात॥

कठिन शब्दार्थ- ***कहत*** = कहते हैं। ***नटत*** = मना करते हैं। ***रीझत*** = अत्यधिक प्रेम प्रकट करना। ***खीझत*** = खीज ना, बुरालगना, गुस्सा आना। ***मिलात*** = मिला लेते हैं। ***खिलत*** = गद-गद हो जाते, प्रसन्न हो जाते हैं। ***लजियात*** = लज्जित हो जाते हैं। ***भरे*** = लोगों से भरा हुआ। ***भौन*** = भवन। ***नैनन*** = नेत्रों से। ***सौं*** = से।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं । इस दोहे में कवि एक-दूसरे से आँखों-आँखों में बात करते, प्रसन्न होते, मिलते, खिलते और खीझते हुए दिखाए हैं।

व्याख्या- कवि कहता है कि नायक और नायिका लोगों से भरे हुए भवन में लोक लाज के कारण वे बोलकर बातचीत नहीं कर पाते हैं इसलिए आंखों के संकेत से बात करते हैं। नायक नायिका को मिलने के लिए आमंत्रित करता है लेकिन नायिका मना कर देती है। नायिका के मना करने के ढंग को देखकर नायक उस पर और एक मोहित हो जाता है, जिससे नायिका को बड़ी खीझ होती है अर्थात उसे नायक पर हल्का क्रोध आता है और इसी क्रोध में दोनों की आंखें मिल जाती है। दोनों की आंखें मिलने से उनके हृदय खिल जाते हैं अर्थात मन प्रसन्नता से भर जाते हैं। नायिका को लज्जा का अनुभव होता है और वह लजाकर अपनी आंखें नीचे कर लेती है।

विशेष-

(i) नायक-नायिका लोक लाज के कारण सबके सामने बात कर पाते हैं। अत: आँखों से ही अपने मनोभाव व्यक्त कर रहे हैं।
(ii) संयोग श्रृंगार को सुंदर चित्र हुआहै।
(iii) अनुप्रास' अलंकार को चमत्कार है।
(iv) शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(17)

कागद पर लिखत न बनत,
कहत सँदेसु लज़ात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ,
मेरे हिय की बात॥

कठिन शब्दार्थ- ***कागद*** = क़ागज। ***लिखत*** = लिखते। ***नबनत*** = नहीं हो पा रहा। ***लजात*** = लज्जा आती है। ***कहिहै*** = कहेगा। ***हियौ*** = हृदय॥

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। इस दोहे में कवि ने, प्रेमी को अपनी मनोभावनाएँ बताने को आतुर एक प्रेमिका को प्रस्तुत किया है।

व्याख्या- नायिका अपने हृदय के अनुभव नायक तक पहुंचाने के लिए पत्र लिखना चाहती है, परंतु

जैसे ही वह पत्रक में बैठती है, विरह व्यथा के कारण वह कुछ भी नहीं लिख पाती है। संदेशवाहक के द्वारा अपना संदेश पहुंचाने में भी उसे लोक लाज का भय रहता है। लज्जा के कारण वह संदेशवाहक से भी कुछ नहीं कह पाती है। नायिका नायक को संबोधित कर कहती है कि मैं अपना संदेश तुम तक नहीं पहुंच पा रही हूं परंतु आपका हृदय मेरे हृदय की सारी बातें जानता है अर्थात मेरी दशा क्या है वह तुम्हें तुम्हारा हृदय स्वतः ही बता देगा।

विशेष-

(i) कवि ने इस दोहे के माध्यम से आदर्श प्रेम-भावना का स्वरूप प्रस्तुत किया है।

(ii) ***मन से मन को राह होती है*** इससे उक्ति के अनुसार नायिका ने नायक से कहा है कि आपका हृदय मेरे हृदय की सारी बातें जानता है।

(iii) सरल, सहज, परिष्कृत बृज भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iv) सरल शब्दों में हृदय को छू लेने वाली भावनाएँ साकार हुई हैं।

(18)

कहत सबै बेंदी दियै, अंकु दसगुनी होतु।
तिय लिलार बैंदी दियै, अगनितु बढ़त उदोतु॥

कठिन शब्दार्थ- ***सबै*** = सभी। ***बैंदी*** = स्त्रियों द्वारा मस्तक लगाए जाने वाली बिंदी। ***दिए*** = लगाए जाने पर। ***अंकु*** = संख्या। ***दस गुनौ*** = दस गुना। ***तिय-लिलार*** = स्त्री के मस्तक पर। ***अगनितु*** = अगनिनती, अत्यधिक। ***उदोतु*** = प्रकाश, शोभा।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं ।कवि ने बिंदी (शून्य) के महत्त्व को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया है।

व्याख्या- नायिका के अनुपम सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि गणित के अनुसार किसी भी संख्या के आगे बिंदी अर्थात् शून्य लगाने पर उसको मूल्य दस गुना हो जाता है, परन्तु सौन्दर्य शास्त्र के नियम अलग हैं। कवि के अनुसार सुन्दर नारी के ललाट (मस्तक) पर बिंदी लगाए जाने पर उसकी सुन्दरता या शोभा अनगिनती बढ़ जाती है। यहाँ गणित का नियम काम नहीं करता।

विशेष-

(i) दोहे में कवि ने अपनी चमत्कारपूर्ण कथन की प्रवीणता का परिचय कराया है।

(ii) भाषा साहित्यिक है और कथन शैली वचन-वक्रता (कुछ नए ढंग से बात कहना) का सुन्दर नमूना है।

(iii) इस दोहे से बिहारी की बहुज्ञता का पता चलता है।

(19)

डीठि न परतु समान-दुति,
कनक-कनक से गात।
भूसन कर करकस लगत,
परसि पिछाने जात॥

कठिन शब्दार्थ- ***डीठि*** = दृष्टि। ***न परतु*** = नहीं पड़ता। ***समान-दुति*** = एक जैसी दमक या कान्ति। ***कनक*** = सोना। ***गात*** = शरीर। ***भूषन*** = आभूषण, गहना। ***कर*** = हाथ। ***करकम*** = कठोर। ***परसि*** = छुए जाने पर। ***पिछाने*** = पहचाने/जान जाते हैं।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं । इस दोहे में कवि ने नायिका के शरीर की सुन्दरता या गौरवर्ण का कुछ नए ढंग से वर्णन किया है।

व्याख्या- नायिका के रूप सौंदर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करते हुएकवि बिहारी कहते हैं कि नायिका के गौरवर्ण शरीर पर सोने के गहने दिखाई नहीं पड़ते क्योंकि दोनों की दमक या कान्ति एक जैसी है। जब इसके शरीर को हाथ से स्पर्श किया जाता हैं तब सोने के आभूषण हाथों को कठोर लगते हैं। तभी पता चल पाता है कि नायिका ने शरीर पर सोने के आभूषण पहन रखे हैं।

विशेष-

(i) कवि ने नायिका के गौरवर्ण का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

(ii) रीतिकालीन सौन्दर्य-वर्णन की छाप दोहे पर स्पष्ट है।

(iii) ***कनक-कनक*** में पुनरुक्ति तथा ***'कर करकस'*** और ' ***परसिपिछाने'*** में अनुप्रास अलंकार है। '***कनक से गात'*** में उपमा अलंकार है।

(20)

अंग-अंग नग जगमगत, दीपसिखी सी देह॥
दिया बढ़ाएँ हूँ रहै, बड़ौ उज्यारो गेह॥

कठिन शब्दार्थ- ***नग*** = रत्न। ***जगमगत*** = जगमगाते हैं। ***दीपसिखा*** = दीपक की लौ। ***देह*** = शरीर। ***दिया*** = दीपक। ***बढ़ाए हूँ*** = बुझाने पर भी। ***उज्यारौ*** = प्रकाश। ***गेह*** = घर॥

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं । कवि ने नायिका (सुन्दर नारी) के शरीर के गोरेपन की तुलना दीपक की लौ से की है।

व्याख्या- कवि बिहारी नायिका के शारीरिक संग्रह का अनुपम शब्द चित्र करते हुए कहते हैं, इस सुन्दरी के अंग-अंग में रत्नों से ज ड़ित आभूषण जगमगा रहे हैं और इसका शरीर दीपक की उज्ज्वल लौ के समान दमकता हुआ और गोरा है। इसलिए रात के दीपक बुझा देने पर भी घर में बड़ा उजाला बना रहता है।

विशेष-

(i) कवि ने नायिका के शरीर के गौर वर्ण का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

(ii) कवि की रचना पर रीतिकालीन अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन शैली का पूरा प्रभाव दिखाई देता है।

(iii) दोहे में ***पुनरुक्ति*** (अंग-अंग), ***अनुप्रास, उपमा*** अलंकार है। पूरे छंद में ***अतिशयोक्ति*** अलंकार है।

(iv) साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg